ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; SP7: 95-97

डॉ0 रत्ना गर्ग
एसि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रमा जैन कन्या महाविद्यालय, नजीबाबाद, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Editors

Dr. Parmil Kumar
(Associate Professor),
Sahu Jain (P.G) College, Najibabad (Bijnor), Uttar Pradesh, India

Faiyazurrehman
(Research Scholar),
Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra), Uttar Pradesh, India

Dr. Anurag
(Principal),
Baluni Public School Tallamotadak, Najibabad), Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
डॉ0 रत्ना गर्ग
एसि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रमा जैन कन्या महाविद्यालय, नजीबाबाद, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

(*Special Issue*)
"Twenty-First Century: Cultural and Economic Globalization"

सांस्कृतिक वैश्वीकरण

डॉ0 रत्ना गर्ग

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2021.v7.i7Sb.8684

सारांश

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। वैश्वीकरण राष्ट्रीय सीमाओं और संस्कृतियों में उत्पादों, प्रौद्योगिकी, सूचना और नौकरियों का प्रसार है। आर्थिक संदर्भ में देखा जाए तो यह मुक्त व्यापार के माध्यम से दुनिया भर में फैले राष्ट्रों की एक दूसरे पर निर्भरता का वर्णन करता है। सकारात्मक दृष्टि से यह गरीब और कम विकसित देशों में नौकरी के अवसर प्रदान करनें, आधुनिकीकरण और माल और सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्रदान करके जीवन स्तर में वृद्धि करने में सक्षम है। नकारात्मक पक्ष में, यह अधिक विकसित और उच्च मजदूरी वाले देशों में नौकरी के अवसरों को समाप्त कर सकता है क्योंकि माल का उत्पादन सीमाओं के बाहर जाता है। वैश्वीकरण का उदय 80वीं के दशक में हुआ था, परन्तु इसकी अवधारणा अति प्राचीन काल से ही मानव समाज में विद्यमान थी। 17वीं सदी के मध्य में इंग्लैण्ड का उपनिवेशवाद आरंभ हो गया था, वहीं फ्रांस ने भी इस दिशा में प्रगति की है। उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप ही वैश्वीकरण हम सभी के सामने आया। भूमंडलीकरण जिस बाजारवाद की विवेचना करता है उसका आधुनिक स्वरूप भारत में आज से 29 वर्ष पहले सन् 1991 के आर्थिक उदारीकरण एवं खुले बाज़ार की नीति के तहत सामने आया। इसका उद्देश्य न केवल अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना था बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत को आर्थिक रूप में खड़ा करना था। वैश्वीकरण से गरीबी उन्मूलन, रोजगार में वृद्धि, श्रम में गुणवत्ता एवं अनेक क्षेत्रों में बेहतरी की परिकल्पना की गई थी। सांस्कृतिक वैश्वीकरण दुनिया भर में विचारों, अर्थों और मूल्यों के प्रसारण को इस तरह से संदर्भित करता है जिससे सामाजिक सम्बन्धों का विस्तार और गहन हो सके। इस प्रक्रिया को संस्कृतियों की आम खपत द्वारा चिन्हित किया गया है जो इंटरनेट, लोकप्रिय संस्कृति मीडिया और अंतरराष्ट्रीय यात्रा द्वारा फैल गई है। इसने कमोडिटी एक्सचेंज और उपनिवेशीकरण की प्रक्रियाओं को जोड़ा है। जिनका दुनिया भर में सांस्कृतिक अर्थ रखने का लम्बा इतिहास है। संस्कृतियों का प्रसार व्याक्तियों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं को पार करने वाले विस्तारित सामाजिक सम्बन्धों में भाग लेने में सक्षम बनाता है। ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण और विस्तार केवल भौतिक स्तर पर नहीं देखा जाता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण में साझा मानदण्डों और ज्ञान का निर्माण शामिल है जिसके साथ लोग अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक सांस्कृतिक पहचान को जोड़ते हैं। यह विभिन्न आबादी और संस्कृतियों के बीच परस्पर जुड़ाव को बढ़ाता है।

कूटशब्द: वैश्वीकरण, रूपांतरण, प्रौद्योगिकी, सूचना और नौकरियां, भूमण्डलीकरण इत्यादि।

प्रस्तावना

सांस्कृतिक वैश्वीकरण दुनिया भर में विचारों, अर्थों और मूल्यों के प्रसारण को इस तरह से संदर्भित करता है जिससे सामाजिक सम्बन्धों का विस्तार और गहन हो सके। इस प्रक्रिया को संस्कृतियों की आम खपत द्वारा चिन्हित किया गया है जो इंटरनेट, लोकप्रिय संस्कृति मीडिया और अंतरराष्ट्रीय यात्रा द्वारा फैल गई है। इसने कमोडिटी एक्सचेंज और उपनिवेशीकरण की प्रक्रियाओं को जोड़ा है। जिनका दुनिया भर में सांस्कृतिक अर्थ रखने का लम्बा इतिहास है। संस्कृतियों का प्रसार व्याक्तियों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं को पार करने वाले विस्तारित सामाजिक सम्बन्धों में भाग लेने में सक्षम बनाता है। ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण और विस्तार केवल भौतिक स्तर पर नहीं देखा जाता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण में साझा मानदण्डों और ज्ञान का निर्माण शामिल है जिसके साथ लोग अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक सांस्कृतिक पहचान को जोड़ते हैं। यह विभिन्न आबादी और संस्कृतियों के बीच परस्पर जुड़ाव को बढ़ाता है।

वैश्वीकरण के उद्देश्य

वैश्वीकरण के उद्देश्य आदर्शवादी के साथ ही अवसरवादी भी हैं। यह एक वैश्विक मुक्त बाजार के विकास में विशेषकर पश्चिमी दुनिया में स्थित बड़े निगमों को बहुत अधिक लाभान्वित किया है। इसका प्रभाव विकसित और विकासशील दोनो तरह के देशों में श्रमिकों, संस्कृतियों और दुनियाभर के छोटे व्यवसायों के लिए मिश्रित है। साथ ही निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

- दुनिया के देशों को एकीकृत बाजार में रूपांतरित करना।
- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के निर्माण।

वर्तमान समय में मानव जीवन के लगभग सभी पक्ष अपने निवासी देश से हजारों और लाखों मील दूर स्थित संगठनों की गतिविधियों और सामाजिक ताने–बानो से प्रभावित होने लगे हैं। सम्पूर्ण विश्व एक एकिक समाज व्यवस्था का रूप धारण करता जा रहा है। परिवर्तन का यह रूप एक ऐसे विश्व की परिकल्पना प्रस्तुत करता है जिसमें सभी सीमा रेखाएं और सीमाएं उत्तरोत्तर धीरे–धीरे बढ़ती नजर आती है जिसमें अधिकाधिक व्यक्ति और संस्कृतियाँ एक दूसरे से घनिष्ठ एवं निकस्थ सम्पर्क में आ सकें। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आजकल एक ऐसी नवीन चेतना का उदय हो रहा है जिसके कारण विश्व के सभी राष्ट्र, राज्य एक जगह मिल–जुल बैठकर मानव जीवन की दुष्कर समस्याओं (जैसे पर्यावरण का क्षरण) के समाधान को खोजने तथा जीवन को अधिकाधिक खुशहाल और बेहतर बनाने के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करके साथ–साथ निर्णय करने लगे हैं। सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक सम्बन्धों के अपने–अपने राष्ट्र राज्य से परे विश्वव्यापी स्तर पर विस्तार की इस प्रक्रिया को ही वैश्वीकरण का नाम दिया गया है। एथॉनी गिडेन्स (1990) ने लिखा है कि ''विश्वव्यापी आधार पर सामाजिक सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाने का नाम ही वैश्वीकरण है।''

इतिहास इस बात का साक्षी है कि व्यापार, युद्ध और विजय जैसी घटनाओं के कारण कोई भी समाज पूर्णतः अछूता नहीं रहा है। फिर भी अपने आधुनिक रूप में वैश्वीकरण का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। इसकी शुरूआत के बाद पूँजीवाद के द्वारा गति पकड़ने के साथ हुई है। वैश्वीकरण की अवधारणा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के समाजशास्त्र और विश्व व्यवस्था सिद्धान्त दोनो से भिन्न है। विश्व व्यवस्था सिद्धान्त भूमंडली अधिक पारम्परिक निर्भरता के विकास की विवेचना करता है और इसके द्वारा यह प्रतिपादित किया जाता है कि सांस्कृतिक भूमंडलीकरण तो आर्थिक भूमंडलीकरण का परिणाम मात्र है। वैश्वीकरण को पूर्ववर्ती इस धारणा के साथ भी मिलाने की भूल नहीं करनी चाहिए कि यह राष्ट्र राज्यों का औद्योगिक समाज के एक सम्मिलित एवं समन्वित स्वरूप में अपने व्यकितगत अस्तित्वों का विलोपन है। आधुनिक भूमंडलीकरण सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि वैश्वीकरण दो पूर्णतः विरोधी प्रक्रियाओं अर्थात समरूपीकरण और वैभिव्यीकरण द्वारा निर्मित होता है। इन प्रक्रियाओं के दौरान स्थानीयवाद और भूमंडलवाद दोनो में निरन्तर अन्तःक्रिया होती रहती है तथा भूमंडलीकरण को प्रक्रियाओं के प्रति विरोध हेतु शक्तिशाली आन्दोलन हाते हैं।

वैश्वीकरण कोई एक प्रघटना नहीं है अपितु यह कई घटनाओं की घटना है। यह एक प्रक्रिया और प्रघटना दोनो है। इसके कई आयाम और अनेक चेहरे हैं– आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, परिस्थितिक आदि आदि। अतः इसकी व्याख्या भी एक अलग प्रकार से की गई है। मोटे तौर में वैश्वीकरण विश्व स्तर पर क्रियाशील एक ऐसी प्रक्रिया है जो समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हुए समुदायों और संगठनों को अन्योन्याश्रितता और अन्तःपारस्परिकता के सम्बन्धों में बाँधती है। यह वैश्वीकरण स्तर पर आंदोलन एवं घुलन–मिलन, सम्पर्कों और अनुबंधों तथा स्थाई सांस्कृतिक अन्तःक्रिया और आदान प्रदान की एक प्रक्रिया है। मानव प्रतिवेदन (2000) में वैश्वीकरण के चार प्रमुख लक्षणों की चर्चा की गई है। नये बाजार, नये उपकरण, नये कार्यकर्त्ता और नये नियमाचार।

वैश्वीकरण में समय और स्थान की महत्ता है। ये दोनो ही धीरे–धीरे सिमटते जा रहे हैं। मुम्बई और न्यूर्याक की दूरियों में अब कोई दूरी नहीं रह गई है। पलक झपकते ही हजारो मील से संदेश प्राप्त किया और भेजा जा सकता है। इस प्रक्रिया ने स्थानीयता और सार्वभौमिकता को आमने सामने खड़ा कर दिया है। यह प्रक्रिया किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। यद्यपि इसकी शुरूआत आर्थिक क्षेत्र से हुई है, तथापि इसने जीवन के सभी पक्षों या सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और वैचारिक को न्यूनाधिक रूप में प्रभावित किया है। आर्थिक वैश्वीकरण के रूप में आजकल विभिन्न देशों के बाजार और उत्पादन पारस्परिक रूप में एक दूसरे पर अधिकाधिक निर्भर रहते है। इस निर्भरता के कारण व्यापार और वस्तुओं की गतिशीलता के साथ–साथ पूंजी और तकनीकी ज्ञान एवं तंत्र का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना है। वित्तीय पूंजी का भूमंडलीकरण आर्थिक उदारीकरण एवं निजीकरण जैसी प्रक्रियाएं आर्थिक वैश्वीकरण के आधार तत्व हैं। सांस्कृतिक वैश्वीकरण ने संस्कृति के समागम के युग का सूत्रपात किया है। सभी स्थानों के व्यक्तियों की जीवनशैली (खान–पान, पहनाव–ओढ़ाव, रहन–सहन, लौकिक–तार्किक, वैज्ञानिक विचार परम्परा आदि) में सर्वदेशीय संस्कृति और एक प्रकार की निराली समरूतपा के स्पष्ट दर्शन किये जा सकते हैं। नई उद्भूत वैश्विक जीवन पद्धति एक प्रकार की सांझा संस्कृति को प्रकट करती है। इस वैश्विक संस्कृति को फैलाने में जनसंचार के साधनों ने महत्ती भूमिका अदा की है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक की घटनाएं देश की राजनैतिक नीतियों के निर्धारण में आजकल वैश्विक संगठनों जैसे डब्ल्यू.टी.ओ., आई.एम.एफ. विश्व बैंक आदि की महत्ती भूमिका होती है। जो अन्ततः देश की राजनीति को भी प्रभावित करती है। वैश्वीकरण की सहायता से उपभोक्ता अब अत्यन्त शक्तिशाली बन गये हैं। वैश्वीकरण का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव सामाजिक सुखद परिवार और संस्कृति पर पड़ा है।

वैश्वीकरण में योगदान देने वाले कारक

- दुनिया भर में नई तकनीक और संचार के रूप विभिन्न संस्कृतियों को एक दूसरे में एकीकृत करने में मदद करते हैं।
- बड़े पैमाने पर प्रवास और व्यक्तिगत यात्रा के साथ परिवहन प्रौद्योगिकियों और सेवाओं ने क्रॉस–सांस्कृतिक आदान–प्रदान की अनुमति देकर वैश्वीकरण के इस रूप में योगदान दिया।
- बुनियादी ढ़ाँचे और संस्थागत परिवर्तन एम्बेडेड परिवर्तन।

वैश्वीकरण के आर्थिक पहलू

- खुला अंतरराष्ट्रीय बाजार
- अंतरराष्ट्रीय निवेश
- अंतरराष्ट्रीय निजीकरण

वैश्वीकरण की विशेषताएं

- उदारीकरण
- मुक्त व्यापार
- आर्थिक गतिविधियों का वैश्वीकरण
- आयात–निर्यात का उदारीकरण
- निजीकरण
- आर्थिक सहयोग
- आर्थिक सुधार

वैश्वीकरण के लाभ

- कम्पनियों और राष्ट्रों को लाभ की अनुमति देता है।
- अर्थशास्त्र, प्रौद्योगिकी और सूचना में विकास और उन्नति के अवसर प्रदान करता है और आमतौर पर विकसित देशों को प्रभावित करता है।
- अन्य लोगों और संस्कृतियों के बारे में कम रूढ़िवादिता और गलत धारणा।
- विश्वस्तर पर अपने मूल्यों और विचारों की रक्षा करने की क्षमता।
- कम्पनियों के बीच अन्योन्याश्रित कम्पनियों का निर्माण करता है।
- अन्य संस्कृतियों के उत्पादों तक पहुंच।

वैश्वीकरण के पक्ष

- वैश्वीकरण से सभी क्षेत्रों का विकास होना निश्चित।
- वैश्वीकरण से उत्पन्न सभी समस्यायें इसके पूर्ण विकास के साथ समाप्त।
- वैश्वीकरण से विशेषज्ञता का आवागमन।
- दुनिया के विशिष्ट वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग की सर्वसुलभता।

वैश्वीकरण के विपक्ष

- अमीर देशों को गरीब देशों की कीमत पर लाभ।
- आर्थिक संकट उत्पन्न होने का नियमित स्रोत।
- अमीरों का गरीबों पर थोपा हुआ निर्णय।
- लाभों के असमान वितरण।
- सामाजिक सुरक्षा की कीमत पर व्यक्तिगत लाभ।
- सुरक्षावाद और उपनिवेशवाद में वृद्धि।
- अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक निर्णयों पर बड़े व्यवसायों का बढ़ता प्रभाव।

वैश्वीकरण का संस्कृति पर प्रभाव

- वर्ण संकर संस्कृति का उदय।
- खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, भाषा–बोली पर प्रभाव।
- मुद्रा, वस्तु, व्यक्ति को निरन्तर क्षेत्रीय सीमा से परे जाने को मजबूर करना।
- स्थानांतरण, शरणार्थी और धुमंतु लोगों में वृद्धि।
- क्षेत्रीय संस्कृतियों से लोगों का उपभोक्तावादी संस्कृति की तरफ झुकाव।
- वैश्विक प्रकृति की संस्कृति का उदय।
- पूंजीवादी समाजों के अनुरूप सांस्कृतिक मॉडल का विस्तार।
- सांस्कृतिक वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक विविधता का कम होना।

वैश्वीकरण का संचार पर प्रभाव

- संचार माध्यम के पलायन की अवधारणा का उदय।
- विचारधारात्मक पलायन संस्कृति का विस्तार–नागरिकता, स्वतंत्रता, मानवाधिकार, जनतंत्र, विवेकवाद।
- मीडिया बाजार में अतिशय वृद्धि।
- मीडिया जगत में वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति के दायरा में संकुचन।
- संचार तकनीकी के उच्चतम रूप बहुत अधिक खर्चीले।
- मीडिया में विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया को तकनीकी उन्नति ने संभव बनाया।
- मीडिया साम्राज्यवाद में वृद्धि।
- सांस्कृतिकरण के विकास में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका।
- लोकप्रिय संस्कृति का उदय।
- मीडिया वैश्विक संस्कृति के समरूपीकरण के लिए एक उपकरण।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक वैश्वीकरण के पैटर्न सिद्धान्तों और विचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलाने का एक तरीका है। वैश्वीकरण ने हमें आर्थिक और राजनीतिक रूप से प्रभावित किया है लेकिन वैश्वीकरण ने व्यापक स्तर पर सामाजिक रूप से भी प्रभावित किया है। असमानता के मुद्दों के साथ जैसे कि नस्ल, जातीय और वर्ग व्यवस्था, समाजिक असमानताएं उन श्रेणियों के भीतर एक भूमिका निभाती है। प्रौद्योगिकी एक ऐसा प्रभाव है जिसने संस्कृति के वैश्वीकरण को फैलाने वाले सेतु का निर्माण किया। यह वैश्वीकरण, शहरीकरण और प्रवासन को एक साथ लाता है और इसने आज के रूझानों को कैसे प्रभावित किया है। शहरी केन्द्रों के विकसित होने से पहले, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्वीकरण का विचार यह था कि वैश्वीकरण विभिन्न राष्ट्रों द्वारा राज्य प्रतिबंधों को हटाने के कारण हुआ। वस्तुओं और सेवाओं, अवधारणाओं और विचारों के प्रवाह के लिए राष्ट्रीय सीमाएं थीं। सांस्कृतिक वैश्वीकरण विभिन्न संस्कृतियों को अंतर्सम्बन्ध में लाने की एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण और इसके दीर्घकालिक इतिहास के प्रभाव के बहुलीकरण दोनों को प्रकट करता है। वैश्वीकरण को मापने के लिए कई प्रयास किये गये हैं, आमतौर पर ऐसे सूचकांकों का उपयोग करते हुए जो व्यापार प्रवाह, राजनीतिक एकीकरण और अन्य उपायों के लिए मात्रात्मक डेटा को कैप्चर करते हैं। दो सबसे प्रमुख हैं– एटी किर्नी/विदेश नीति वैश्वीकरण सूचकांक और केओएफ वैश्वीकरण सूचकांक। सांस्कृतिक वैश्वीकरण, हालांकि मात्रात्मक डेटा का उपयोग करके कब्जा करना अधिक कठिन है क्योंकि विचारों, विचारों और फैशन के प्रवाह के आसानी से सत्यापन योग्य डेटा को खोजना मुश्किल है।

संदर्भ–सूची

1. पॉल जेम्स; जॉन टुलोच (2010), वैश्वीकरण और संस्कृति, वॉल्यूम 1, वैश्वीकरण संचार, ऋषि प्रकाशन।
2. पॉल जेम्स, पीटर मैंडविल (2010), वैश्वीकरण और संस्कृति, वॉल्यूम 2, धर्मों का वैश्वीकरण, ऋषि प्रकाशन।
3. पॉल जेम्स, इमरे सेज़मैन (2010), वैश्वीकरण और संस्कृति, वॉल्यूम 3, वैश्विक स्थानीय खपत, ऋषि प्रकाशन।
4. पॉल जेम्स, मैनफ्रेड स्टीगर, (2010), वैश्वीकरण और संस्कृति, वॉल्यूम 4, वैश्वीकरण की विचारधारा, ऋषि प्रकाशन।
5. सांस्कृतिक वैश्वीकरणः विकिपीडिया।
6. दैनिक समाचार पत्र, अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, जनवाणी, विभिन्न तिथियों से सम्बन्धित।
7. www.orfonline.org
8. www.drishtiias.com